VAM SWARAJWADI VYAKTIGAT DEHSHATGARD AUR HINDU-MUSLIM SAMASYA PAR KAMRED JOHNSON KE NAM KHAT

J.V.STALIN

वाम स्वराजवादी, व्यक्तिगत दह्शतगर्द और हिन्दु-मुस्लिम समस्या पर कमरेड जोनसन के नाम खत

जे. वी. स्टालिन

(अगस्त ६, १९२६)

कामरेड जोनसन को

आपके सवालो का जवाव मैं यहाँ भेज रहा हुँ.

१. मैं सोचता हुँ कि भारत की कम्युनिष्ट पाटी को कुछ वाम स्वराजवादी हलकों में व्यक्तिगत दह्शतगर्दी पर हो रहे अमल के खिलाफ जरुरी तौर पर एक मुकम्मल संघर्ष चलाना चाहिये. कम्युनिष्ट पार्टी को लगातार यह समझाना चाहिये कि व्यक्तिगत दहशत जनता को जीतने के मकसद से बनाई गई पार्टी नीति के अत्यंत खिलाफ है. कम्युनिष्ट पार्टी को लगातार यह समझाना चाहिये कि व्यक्तिगत दह्शतगर्दी की कार्यनीति जनता की पहलकदमी की तरक्की को रोकती है, जनता मे बैठे रहने की फितरत घर जमा लेती है, व्यक्तिगत हीरो-दहशतगर्द के संबध मे एक अंधभक्ति की भावना का विकास होने लगता है, इसलिये, यह भारत के इंकलाबी आंदोलन के दुशमनो के हाथो का खिलौना बन जाता है. मै जानता हुँ कि सबसे पहली बात तो यह है कि ऐसी नीति को चलाना मुश्किल होगा . लेकिन मै यह भी जानता हुँ कि दहशतगर्द की नीति के खिलाफ संघर्ष किये बिना भारत मे इंकलाबी आंदोलन को हकीकत मे इंकलाबी रास्ते पर लाने का कोई मौका नही होगा.

२. हमे स्वराज से वाम पंथीयों के निकल जाने का मुद्दा नही उठाना चाहिये, बल्कि स्वराज पार्टी को इसके भीतर से वामपथींयो को जीत लेना चाहिये. यह मुकम्मल करना जरुरी है कि स्वराज मे वामपंथ एक एकताबध गुट में संगठित हो. यह मुकम्म्ल करना जरुरी है कि वाम पंथ, अपनी उर्जा बरबाद किये बिना, अपने कामो को अहम तौर पर बंगाल और बम्बई की जगहो पर केन्द्रीत करे और उसे इन इलाको को अपने पक्ष मे जीत ले. हमे यह मुकम्म्ल करना चाहिये कि बुनयादी प्रकाशन और पार्टी मुखपत्र इन दो अहम जगहो पर वामपथींयो के हाथो मे केन्द्रीत हो. केवल इन दो जगहो पर ताकतवर होने के बाद ही स्वराज में वामपंथ हकीकत में बहुमत मे होगा – केवल तब ही इसे स्वराज पार्टी मे शासी निकाय को जीतने का सवाल उठाना चाहिये. यह मुमकिन है कि दक्षिण पंथी तत्व छोड़ देंगे या उन्हे बाहार निकाल दिया जाएगा. मै सोचता हुँ कि इसमे कुछ भी गलत नही है. बल्कि इसका स्वागत किया जाना चाहिये. तब स्वराज का बैनर हमेशा वाम पंथीयों के हाथों मे रहेगा, और पूरा का पूरा स्वराज आमतौर पर वाम की ओर चला जाएगा और भारत के आजादी के इंकलाबी आन्दोलन के रास्ते पर असल मे वापस लौट आएगा. संक्षेप में, वाम को स्वराज को नही छोड़ना चाहिये, बल्कि स्वराज पर भीतर से फतह और कब्जा कर लेना चाहिए .

३ हमे यह बात दिमाग मे रखना चाहिए कि स्वराज में ब्रिटिश साम्रज्यवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई मे वाम हमेशा भरोसेमंद और पक्के नही बने रहेंगे. इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि न केवल दक्षिणपंथी स्वराजवादी पोर्टफोलियो(विभागों) के प्रति झुकाव रखतें हैं बल्कि उन्ही विभागों को वाम स्वराजवादी भी कभी-कभी उम्मीद से देखतें हैं. इस बात को कैसे मुकम्मल किया जा सकता है कि वाम स्वराजवादी स्वराज में वर्चस्व हासिल कर लेने के बाद कम से कम वक्त-वक्त पर सम्रज्यवादीयों की तरफ नही जाएंगे? भारत मे केवल एक ताकतवर कम्युनिष्ट पार्टी ही इस बात को मुकम्मल कर सकती है. जिस हद तक भारत की कम्युनिष्ट पार्टी वाम स्वराजवादीयों के इर्द-गिर्द बनी रहेगी और उन्हे आगे बढाने के लिये दवाव डालेगी उस हद तक यह यकीन करना मुमकिन होगा कि वाम स्वराजवादी आन्दोलन भविष्य में आगे फिर कभी अवसरवादी राहों पर वापस नही लौटेगा. कम्युनिष्ट पार्टी का काम खुद को, खासतौर से बगांल और बम्बई में, ताकतवर बनाना है, , जो भारतीय राजनीतिक जिन्दगी की रफ़्तार तय करता है. कम्युनिष्ट पार्टी का काम इन इलाको में अपनी बुनियाद बनाना है, वाम स्वराजवादीयों पर दवाव बनाना और उन्हे ब्रिटिश सम्राज्यवाद के खिलाफ निर्णायक संघर्ष की ओर धकेलना है ताकि इस बात को पूरे तौर पर मुकम्म्ल किया जा सके कि कम्युनिष्ट भारत मे इंकलाब की अगुआ ताकत बनेगें. .

४. हिन्दु मुस्लिम झगड़े मे, जो इंग्लैंड द्वारा भड़काया गया था, तुम्हे मुस्लिमो के राजनीतिक , धार्मिक मुद्दे और सांस्कृतिक क्षेत्र मे राष्ट्रिय बराबरी की घोषणा और अमल के अर्थ में खास रियायतें की दिशा मे कदम बढाना होगा. भारत मे राष्ट्र के भीतर हो रहे झगड़े को खत्म करने का इसके सिवा ना तो कोई तरीका है ना हो सकता है.

हिन्दु बहुसंख्यक हैं, मुस्लिम अल्पसंख्यक. इसलिए राष्ट्र के भीतर झगड़े के खात्मे के लिये, हिन्दु और मुस्लिम मेहनतकश अवाम की कोशिशों को एक बनाने के लिये और दोनो पक्षों के अहम दुश्मन , ब्रिटिश सम्रज्यवाद, के खिलाफ उन्हे मोर्चे पर भेजने के लिये, हिन्दुओं को खास रियायतें देने के लिए तैयार होना होगा . बिना इन तरीको के, ऐसी खास रियायतों की दिशा मे कदम उठाए बिना, मुझे भय है, राष्ट्र के भीतर झगड़े और तेज होंगे और भारत मे ताकतवर इंकलाबी आंदोलन कम-से-कम कुछ वक्त के लिए राष्ट्र के भीतर के झगड़ो की अराजकता के गर्त मे चला जाएगा.

इसलिए मुस्लिमों को खास रियायतें दिया जाना, अन्तरराष्ट्रियता के बुनियाद पर राष्ट्र के भीतर के झगड़ो का खात्मा, अपने अहम दुश्मन ब्रिटिश साम्रज्यवाद के खिलाफ मुस्लिम और हिन्दु मेहनतकश आवाम की कोशिशों मे एकता लाना, मेरी राय मे यह अहम काम है.

कम्युनिष्ट अभिवादन के साथ

स्टालिन

अग्सत ६, १९२६

आरजीएएसपआई, फण्ड ५५८, लिस्ट.११. दस्तावेज १३९, पृष्ट ८९-९१.

टाइप किया हुआ.

प्रतिकृति हस्ताक्षर.

रसियन से इरिना मालेनको द्वारा अनुवादित .

रिवोल्युशनरी डेमोक्रेसी, वॉल्यूम बीसवीं, नंबर 2, सितम्बर 2014 में अंग्रेजी में प्रकाशित